श्रीमती उर्मिला मिश्र

नेहा

चतुर्वेदी

मेरी नानी श्रीमती उर्मिला मिश्र के 29 जून 2008 को बम्बई में निधन से हमारे ननिहाल का सबसे स्नेहपूर्ण व्यक्तित्व ओझिल हो गया।

अपने जन्म 10 अप्रैल 1920 के बाद से मेरी नानी का बचपन इटावा तथा मैनपुरी में बीता। उनके पिता श्री सुखदेव की अकाल मृत्यु के कारण वह अपनी मां कैलाशवती जी तथा बहन प्रभा के साथ बचपन में मुरादाबाद में अपनी बड़ी ननसार की देखरेख में रहीं। राज घराने के अनुशासन, तौर तरीके और रहन सहन से उनमें परस्पर प्रेम व्यवहार तथा समझदारी के गुण मिले। कुवंर सर जगदीश प्रसाद ;बड़े मामाद्ध तथा मामी के स्नेहपूर्ण व्यवहार के किस्से वह बहुत गर्व से सुनाती थीं।

विवाह के बाद हमारी नानी जयपुर के प्रख्यात काशी भवन में आई। उनके पति ;मेरे नानाद्ध इंजीनियर हरिहर नाथ जी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रशिक्षित इंजीनियर थे। अपने सरल तथा सहज स्वभाव और मेहनती दिनचर्या से वह पूरे परिवार में सर्व प्रिय बन गयीं। सबके प्रति अपने प्रेमभाव और मिलन सारिता से वह प्रेसीडेन्ट भाभी के नाम से मशहूर हो गयीं।

मेरी नाना बम्बई में कमानी इंजीनियरिंग कारपोरेशन में टेक्निकल डायरेक्टर थे। बाद में उन्होंने अपना निजी कारोबार शुरु किया। उनके जीवन के उतार चढ़ाव का सामना करने में तथा व्यवसायिक सफलता हासिल करने में मेरी नानी का पूर्ण सहयोग लाभप्रद रहा।

पुराने मूल्यों में विश्वास रखने वाली मेरी नानी में नए जमाने के साथ चल सकने की काब्लियत थी। बम्बई में उन्होंने टेलरिंग, कढ़ाई तथा कुकरी का प्रशिक्षण लिया। अपने बच्चों को अंग्रेज़ी शिक्षा दिलवाने के अपने इरादे में भी कामयाबी हासिल की। जहां उन्होंने आज से साठ वर्ष पहले फ्रिज तथा वाशिंग मशीन का इस्तेमाल करना शुरु किया वहां वह दूसरी ओर जीवन पर्यन्त पूजा पाठ की अपनी दिनचर्या से भी न डिगीं।

मेरी नानी बेहद खूबसूरत और सलीकेदार थीं। मिलने वाले प्रायः उन्हें किसी राज घराने की महारानी समझ बैठते थे।

बम्बई के स्थानीय चतुर्वेदी समाज के कार्यकलापों में उन्होंने बहुत सक्रिय भाग लिया। मेरे नाना लम्बे अरसे तक बम्बई चतुर्वेदी सभा के अध्यक्ष थे। 1940 से 70 के दशकों में नानी ने सामाजिक गतिविधियों में महिलाओं के समुचित योगदान के लिये स्वयं एक मिसाल रखी। पिकनिक, होली मिलन, कवि सम्मेलन, खेलकूद तथा नृत्य प्रतियोगिता आदि के आयोजनों में वह प्रायोगिक रूप से तत्पर रहती थीं।

1978 में नाना जी के आकस्मिक निधन से 2008 तक तीस वर्ष के लम्बे अरसे में नानी जी ने अपनी समझदारी, सूझबूझ और शालीनता से परिवार के मुखिया की भूमिका अदा करते हुए सबका आदर व सम्मान प्राप्त किया।

नानी अंग्रेज़ी भाषा से परिचित थीं। लेकिन इंगलिश बोलने में उन्हें हिचकिचाहट होती थी। हम सबके लिये यह कौतूहल की बात थी कि वह अपनी पड़ोसन मिसेज पेज की अंग्रेज़ी में बातों का हिन्दी में जबाव देती रहती थीं। घन्टों तक दोनों के बीच इसी प्रकार वार्तालाप होता था।

मुझे याद है कि जब मैं और मेरा भाई कुश सोलन के पास डगशाई में पढ़ रहे थे; वह मुझसे मिलने मेरे होस्टल में आईं। उसी ट्रिप में शिमला जाने पर उन्होंने पहली बार हिमपात देखा। बर्फ से ढकी सड़क पर चलते हुए उनमें 75 वर्ष की आयु में बाल सुलभ कौतूहल था।

नानी ने मलेशिया, नाईजीरिया तथा केनिया आदि देशों की अपनी यात्राा के दौरान् वहॉ भी अपने मिलने वालों पर अपने मोहक व्यक्तित्व की अमिट छाप डाली। खान–पान के मामलों में अपने विचारों पर वह अडिग थीं।

मेरे नाना के बाद बम्बई सभा की अध्यक्षता की बागडोर मेरे मामा धीरेन्द्र नाथ जी के हाथ में देखकर नानी को बहुत खुशी हुई थी।

नानी के बम्बई के स्थानीय समाज के लिये योगदान के कारण उनके प्रति सम्मान का प्रत्यक्ष प्रमाण मुझे तब देखने को मिला जब तत्कालीन महासभा अध्यक्ष वैद्यराज सुरेश जी को पदमश्री द्वारा सम्मानित किए जाने पर बम्बई सभा ने उनके अभिनंदन के लिए नानी को मंच पर आने की प्रार्थना की। उस समारोह का चित्रा चतुर्वेदी चन्द्रिका में छपा था।

मेरी यादों में सबसे प्यारी स्मृतियां नानी के साथ बिताए क्षण हैं। मैंने अपने नाना को नहीं देखा। मेरे जन्म से पहले ही वे चल बसे। शायद इस कारण से नानी ने मुझे दुगना प्यार दिया। हम सब बच्चों से उन्हें समान स्नेह था। हमरी सुख सुविधा का पूरा ध्यान रखती थीं। हमारी उपलब्धियों और कामयाबी पर गर्व करने वाली हम सबकी शुभचिंतक थीं।